विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८३ | वाराणसी, मंगलवार, १४ जुलाई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

वेड़छी (सूरत) २५-९-'५८

ग्रामदान कामधेनु है

मुझे बताया गया है कि इस सभा में बहुत-से आदिवासी और आस-पास के गाँव के लोग भी आये हैं।

भारत के आदिवासी कौन ?

यह कहना कठिन है कि कौन आदिवासी हैं और कौन नहीं ? इस देश के मूल निवासी कौन हैं और कौन नहीं, इसका निर्णय करना असंभव है। यह बात हिन्दुस्तान में सर्वमान्य है कि दस, बारह, पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व सारी दुनिया से बाहरी कौमें यहाँ आ बसी हैं। आखिर-आखिर में आनेवालों के नाम हम लोग जानते भी हैं। लेकिन पुराने जमाने में आये हुए लोगों को हम नहीं जानते। लोकमान्य तिलक ने एक प्रबन्ध लिखा है जिसमें उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तान में दिखाई पड़ने-वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि उच्च वर्ण उत्तरी ध्रुव के मूल-निवासी हैं। ठेठ जमीन के उत्तरी छोर से ये लोग जमीन खोजते-खोजते भारत में आ पहुँचे। यह बात उन्होंने वेदों की मदद से सिद्ध कर दिखायी है। कितनों का ही यह मत है कि 'एशिया माइनर' की बहुत-सी कौमें अफ्रीका के किनारे आयी थीं। यह भी सत्य ही है। एशिया और पूर्व एशिया के टापुओं से बहुत से लोग भारत आये। यह भी माना जा सकता है, कि उत्तरी ध्रुव प्रदेश ठंढा रहा, इसलिए वहाँसे लोग नीचे आते गये। तमिलनाड आदि भाग में दक्षिणी ध्रुव के लोग आये थे।

भारत की विशेषताएँ

भारत की यही विशेषता है, जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। मुख्य बात यह है कि यहाँ जो जातिभेद दीखता है, वह दुनिया में और कहीं नहीं दीख पड़ता। भारत में मांसाहार-परित्याग का प्रयोग बहुत प्राचीन समय से चला आ रहा है। हिन्दुस्तान में जितने निरामिषभोजी होंगे, उतने दुनिया के अन्य सभी देशों में मिलाकर भी न निकलेंगे। यह हिन्दुस्तान की विशेषता मानी जायगी। इसके सिवा यहाँ एक ही राष्ट्र में १४-१४ समृद्ध भाषाएँ हैं, जब कि यूरोप में एक-एक भाषा के अलग-अलग राष्ट्र हैं। हिन्दुस्तान में मांसाहार-परित्याग का जो प्रयोग हुआ, उसका कारण मैं बाहर के लोगों का आना ही मानता हूँ। हिन्दुस्तान में जो कृषि-कार्य चलता था, उसका समर्थन पुराने ग्रन्थों में मिलता है। यहाँ पहले लोग शिकारकर जीवनयापन करते थे। उन दिनों यहाँ संस्कारी जीवन नहीं था। अहिंसा का गुण-विकास नहीं हुआ था। आस-पास के लोगों ने यहाँकी अच्छी जमीन और उसे जोतने की कला देखी, तब वे वहाँसे यहाँ आ बसे। फलतः हिन्दुस्तान में सह-अस्तित्व, सह-जीवन की शुरुआत हुई। बाद में यहाँ अनेक जातियों के लोग आये। मिस्री, पारसी, हब्शी आदि के नाम तो हम लोग जानते ही हैं। जब इस तरह विविध जातियों के लोग यहाँ आ जुटे तो उनके बीच संघर्ष होना और उसके करते युद्धों की आशंका का भी अनुमान होना स्वाभाविक ही था। हिन्दुस्तान के लोगों ने ये झगड़े मिटाने के लिए इनके बीच बड़ा ही मधुर संबन्ध स्थापित कर दिया। उन्होंने कहा कि भाई, आपका बाड़ा अलग है और हमारा अलग। एक मील पर आपका बाड़ा है तो हमारा बाड़ा दूसरी मील पर रहेगा। आप अपने रीति-रिवाज से चलें और हम अपने रीति-रिवाज से चलेंगे। हम आपके हाथ का न खायेंगे। इस तरह की मर्यादा में बहिष्कार का रूप दीख पड़ता है, लेकिन विविध कौमों को एकत्र रखने के लिए आरम्भ में यह अनिवार्य ही था। इस प्रकार इस जातिभेद का उद्देश्य अच्छा ही था।

जातिभेद मिटाने का उपाय

इस तरह दस हजार वर्षों से एक साथ रहने से आज हम लोग एक दूसरे के काफी निकट में आ गये हैं। फिर भी हम एक-दूसरे को न पहचानें तो यह किसी भी राष्ट्र के लिए लज्जा-जनक बात होगी। अब यह ब्राह्मण, यह आदिवासी आदि बातों से हमें मुक्ति पानी चाहिए। शास्त्रों में आता है कि पहले यहाँ एक ही वर्ण था। काम नहीं चलता था, इसलिए अन्य वर्ण अस्तित्व में आये। फिर जातिभेद और ये बाड़े खड़े हुए। किन्तु आज विज्ञान का नया जमाना आया है। अब भी यदि ये बाड़े बने रहेंगे तो हमारा काम नहीं चलेगा।

बल्कि बाधाएँ ही खड़ी होंगी। इसलिए अब क्या करना चाहिए? इतने सारे रीति-रिवाज, इतने भेद, इतने पंथ एकदम तो मिट नहीं सकते। किन्तु सबका जीवन एकत्र हो जाय, सभी मिलकर खेती करें, एक-दूसरे की फिक्र करें, एक-दूसरे के लिए त्याग करें तो आर्थिक, सामाजिक भेद मिट जायँगे। फिर जातिभेद भले ही कुछ दिनों तक रहे, बाद में धीरे-धीरे वे इसे भी पहचान जायँगे।

ग्रामदान में जब सभी एकत्र जीवन की चिन्ता करेंगे तो जातिभेद की चिन्ता अपने आप कम हो जायगी। जब पूरे गाँव का हित देखने की दृष्टि आ जायगी तो यह स्वाभाविक ही हो जायगा। क्योंकि ग्रामदान में विरोध करने की बात ही नहीं आती। ग्रामदान में तो विरोध के बदले सहयोग की ही बात आती है। ग्रामदान में पाँचों उँगलियाँ एक होकर काम करेंगी। वे एक-दूसरे के सहयोग के लिए तैयार रहेंगी। तब वे पाँचों लाखों काम कर सकती हैं। अगर ये उँगलियाँ एक दूसरे से सहयोग न करें, अलग रहें तो काम कभी न होगा। इन उँगलियों में एक बड़ी तो दूसरी छोटी होगी, फिर भी इनमें अधिक विषमता न रहेगी। थोड़ा-बहुत भेद अवश्य रहेगा।

इस तरह ग्रामदान के जरिये हिन्दुस्तान से जातिभेद मिटाने का काम सहज हो जायगा। किसी भी प्रकार की कशमकश या संघर्ष न होगा। ग्रामदान कामधेनु है। यही कारण है कि जब से मैं गुजरात में आया हूँ, तभीसे रोज कहा करता हूँ कि भाइयो! ग्रामदान करें तो आपको और कुछ भी करना न पड़ेगा। फिर ग्रामदान में भी कुछ करना नहीं है। उसमें सिर्फ सबको एक साथ रहना है। एक-दूसरे की चिन्ता करनी है। यह समझकर जिस तरह सबका समाधान हो, वैसी ग्राम-योजना करनी चाहिए। ग्रामदान में अमुक एक निर्धारित योजना ही रहेगी, ऐसा कोई निर्बन्ध नहीं है। एक गाँव में एक तरह की व्यवस्था होगी तो दूसरे में दूसरी भी तरह की हो सकती है। शर्त यही है कि सारे गाँववालों का उससे समाधान हो। इससे हमारा रास्ता बड़ा ही आसान हो जायगा।

यह जमीन की आसक्ति बढ़ाने का काम

ग्रामदान में जमीन सबकी होनी चाहिए। जिस तरह हवा की कोई मालकियत नहीं, उसी तरह जमीन पर भी किसीकी मालकियत न होनी चाहिए। कई लोग कहते हैं कि 'हवा जितनी भरपूर है, उतनी जमीन नहीं है। जमीन थोड़ी है और आदमी बहुत। ऐसी स्थिति में हवा सबको मुफ्त में मिल सकती है, पर जमीन नहीं मिल सकती। जिस चीज की कमी होती है, उस पर आसक्ति बढ़ जाती है। इसलिए जब आप जमीन की आसक्ति घटाने की बात कहते हैं तो बड़ा ही कठिन मालूम पड़ता है।' इसपर मैं कहता हूँ कि हम जमीन की आसक्ति घटाना नहीं, बल्कि बढ़ाना ही चाहते हैं। जैसे लगभग सभी लोगों को शादी करने की इच्छा होती है। वे दूसरे के विवाह में मदद दिया करते हैं। जिस वस्तु की सभी को जरूरत हो, वह सभीको मिले—इसके लिए सभीको तत्पर रहना चाहिए। अगर शादी की व्यवस्था एक के लिए ही हो और दूसरे के लिए न हो तो समाज में व्यवस्था, स्वास्थ्य और सन्तोष नहीं रह सकता। इसीलिए सबके विवाह की चिन्ता सबको रहती है। इसी तरह मैं जमीन की आसक्ति बढ़ाना चाहता हूँ। मेरा कार्यक्रम भूमि की आसक्ति बढ़ाने का ही है। मैं कहना चाहता हूँ कि सभी लोगों की जमीन पर आसक्ति बढ़े और सभी लोग जमीन पर खेती करें। जमीन के साथ सभीका संपर्क रहना चाहिए। हरएक को जमीन की सेवा करने का अधिकार और कर्तव्य है। इसके साथ दूसरे भी व्यवसाय किये जा सकते हैं। मैं तो मानता हूँ कि राष्ट्रपति को भी नित्य दो घंटे खेती का काम करना चाहिए। अपना एक ही काम करते-करते मस्तिष्क विकृत हो जाता है। खेत पर खुली हवा में दो घंटे काम करने से मस्तिष्क का बोझ उतर जाता है, स्वास्थ्यलाभ होता है और दीर्घायु प्राप्त होती है। इससे मानव के मस्तिष्क में सन्तुलन, समाधान, योग्यता, शक्ति आती है। इस तरह इसमें कुछ भी खोने की बात नहीं। अगर यहाँ जमीन की आसक्ति बढ़ जाय, तो वह बहुत ही शुभ है। यह बात क्योंकर सबकी समझ में नहीं आती यह मेरी समझ में नहीं आता। यदि आप इस तरह ग्रामदान को समझें तो राजनैतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे।

ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य

हर ग्रामदानी गाँव में ग्रामस्वराज्य की स्थापना होगी। बहुतों की कल्पना थी कि इसका दिल्ली में विरोध होगा। लेकिन हुआ इससे सर्वथा विपरीत! अभी-अभी एक अर्थशास्त्री ने जाहिर किया है कि अब तक हमें ३५ करोड़ लोगों के नाम याद रखकर व्यवस्था करनी पड़ती थी। अगर सभी गाँवों में ग्रामदान हो जायँ, तो हमें पाँच लाख गाँवों की ही सूची रखनी पड़ेगी। अगर गाँव-गाँव के लोग अपनी-अपनी चिन्ता करें तो कल अगर विश्वयुद्ध छिड़ जाय तो उन्हें किसी तरह की कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि वे अपने पैरों पर खड़े रहेंगे। हर गाँव अपने खाने-पीने, रहने, कपड़े-लत्ते और दैनिक आवश्यकता की चीजों की स्वयं पूर्ति कर लेगा। इसके विपरीत आज की पंचवर्षीय योजना उस समय फेल हो जायगी। इसीलिए मैं ग्रामदान को 'डिफेन्स मेजर' (सुरक्षा की योजना) कहा करता हूँ। नेताओं ने भी यह वाक्य अपनी डायरी में लिख लिया है। ग्रामदान की तरह दूसरी कोई सरल, सीधी-सादी और समर्थ योजना नहीं हो सकती। इस तरह सभी दृष्टियों से ग्रामदान का काम बड़ा ही आसान है।

नित-नये विचारों की जननी कामधेनु

मैं जानता हूँ और चाहता भी हूँ कि गुजरात में दूसरी कोई ताकत काम नहीं कर सकती। गुजरात के लोग केवल भावना के वश होकर कोई काम कर डालें, यह संभव नहीं। गुस्से में आकर कोई कुछ कर डाले तो उससे मानव की – मानवता की रक्षा नहीं हो सकती। अव्यवस्थित चित्तवाला आदमी कोई काम करे तो उससे भी कुछ नहीं बन सकता। इन सारी बातों पर विचारकर आपको जैसा मालूम पड़े, वैसा करें। मुझे आशा है कि आप ऐसा ही करेंगे। प्रतिदिन मैं कुछ-न-कुछ विचार रख जाया करता हूँ। ग्रामदान तो कामधेनु है और भगवान की कृपा से मुझे रोज नया-नया विचार सूझता रहता है। बहुतों को आश्चर्य लगता है कि यह आदमी किस तरह रोज नयी-नयी बातें कहा करता है! तो क्या ये सारे विचार मेरे मस्तिष्क से ही निकलते हैं? स्पष्ट है कि ग्रामदान-कामधेनु से ही ये सारे विचार प्राप्त हुआ करते हैं। इन्हें मैं रोज थोड़ा-थोड़ा पेश किया करता हूँ। सभीको एक साथ पेश करने में कोई लाभ नहीं है। ◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

नारियाँ (कश्मीर) १५-६-'५९

समस्या का एक ही इलाज : ग्राम-स्वराज्य और विश्व-स्वराज्य

लोगों के सामने सवाल है कि स्वराज्य तो मिला, लेकिन सुराज्य कैसे हो ? सुराज्य हो याने अच्छा राज्य चले, लोग खुश हों। लेकिन मेरे सामने वह सवाल नहीं है। बल्कि यही सवाल है कि स्वराज्य आया—ऐसा कहते तो हैं, लेकिन दरअसल में वह कहाँ है ? आज स्वराज्य न अमेरिका में है, न रूसमें, न चीनमें, न जापान में, न हिन्दुस्तान में और न पाकिस्तान में ही है। किसी भी देश में स्वराज्य नहीं है। वैसे ये सारे देश सियासी मानी में आजाद जरूर हैं। लेकिन दरअसल इन देशों में से कोई देश आजाद है, ऐसा मुझे तो मालूम नहीं देता। कम से कम अपना देश तो आजाद नहीं ही हुआ है, यह मुझे पक्का मालूम है।

'यतेमहि स्वराज्ये'

यह ठीक है कि अंग्रेजों की हुकूमत गयी। यहाँ ऐसी कई हुकूमतें आयीं और गयीं। लेकिन स्वराज्य आया, ऐसा मैं नहीं कह सकता। बल्कि वेद में तो एक मंत्र है 'यतेमहि स्वराज्ये।' अर्थात् स्वराज्य हासिल करने के लिए यत्न करें—ऐसी प्रार्थना ऋषि करता है। वैदिक ऋषियों के जमाने में भी स्वराज्य नहीं था। लोगों का खयाल है कि वेद के जमाने में सभी ऋषि थे और वे ध्यान-धारणा करते थे। लेकिन ऐसा नहीं है। उनकी रहन-सहन हमसे कुछ अलग होगी, पर जनता आज के जैसी ही थी। ऋषि को यह महसूस नहीं होता था कि स्वराज्य आया है। बल्कि वह कहता है कि हम स्वराज्य के लिए कोशिश करेंगे।

आज सियासी आजादी की ज्यादा कीमत नहीं

अब विज्ञान का जमाना आया है। इसमें जिसे हम सियासी आजादी कहते हैं, वह बहुत ज्यादा कीमत नहीं रखती, क्योंकि लोगों की जिंदगी में कितनी ही चीजें ऐसी हैं, जो दुनिया भर से आती हैं। एक सादी-सी बात देखिये—आज हर पढ़े-लिखे व्यक्ति के हाथ पर रिस्ट वाच होगी। जो आलसी है, जिसे वक्त की कीमत कम है, उसे घड़ी से सिर्फ इतना ही पता चलता है कि कितना समय आलस में बीता। फिर भी उसके पास घड़ी होती है, क्योंकि वह एक गहना बन गया है। यह घड़ी बाहर से आती है। अपने देश में नहीं बनती। बाहर से आनेवाली चीजों में कुछ चीजें ऐसी हैं, जो टाली जा सकती हैं। लेकिन कुछ ऐसी भी हैं जो टाली नहीं जा सकतीं और उनका दूर-दूर से आना रुक भी नहीं सकता। अनाज, कपड़ा, मकान जैसी बुनियादी चीजें हम अपने गाँव में अपनी मेहनत से पैदा कर सकते हैं, लेकिन बाकी तमाम चीजें दुनिया भर से आती हैं। दुनिया में कहीं ज्यादा बस्ती है, तो कहीं कम। अब यह हर्गिज नहीं होनेवाला है कि ज्यादा बस्तीवाले अपनी ही जगह पर रुके रहें। वे कम बस्तीवाले प्रदेश में जानेवाले ही हैं। उन्हें प्रेम से जाने दिया जाय तो प्रेम से जायँगे, नहीं तो हमलावर बनकर जायँगे। जैसे पानी का नीचे गिरना लाजमी है, वैसे ही उन्हें हम हमलावर कहें या और कुछ कहें, उनका जाना लाजमी है।

नये सिरे से दुनिया को योजना बनानी होगी

अलावा इसके दुनिया की मुसाफिरी आज जितनी हो रही है, उतनी इसके पहले कभी नहीं हुई थी। आज लाखों की तादाद में लोग विदेशों से हिन्दुस्तान आते हैं और यहाँके लोग भी बाहर जाते हैं। कश्मीर में तो इतने यात्री आते हैं कि यात्रियों की सेवा करना यहाँ का एक उद्योग ही हो गया है, जिससे कश्मीर को काफी आमदनी होती है। अब दुनिया भर के लोग इधर से उधर आने-जानेवाले हैं। इस परस्पर व्यवहार को देखते हुए हमें समझना चाहिए कि इसके आगे सियासी आजादी के बहुत ज्यादा मानी नहीं हैं। चाहे हमने यहाँ (कश्मीर में) फौज की एक कतार खड़ी कर दी है और 'उस पार दुश्मन है' ऐसा हम बोलते हैं, लेकिन अब ऐसी दुनिया चल नहीं सकतीं। अगर ऐसी दुनिया चलेगी तो दुनिया में इन्सान जिंदा नहीं रहेगा। अगर इन्सान को जिंदा रहना है तो हमें नये सिरे से दुनिया की योजना बनानी होगी। उस योजना में यह होगा कि गाँव की इकाई बने, लोग अपने लिए अपना इन्तजाम करें। जब गाँव-गाँव में यह होगा, तभी स्वराज्य आयेगा।

मसला सुराज्य का नहीं, स्वराज्य का

आज जहाँ भी मैं जाता हूँ, देखता हूँ कि लोग इसी फिक्र में रहते हैं कि हमें सरकार से मदद मिले। कुछ लोग इस फिक्र में भी हैं कि हमें सत्ता हासिल हो। याने दोनों सरकार के इर्द-गिर्द ही रहते हैं। मुकामी स्वराज्य, ग्राम-स्वराज्य अपनी योजना खुद बनाये और अपनी बुद्धि का विकास खुद करे। ऐसा नहीं होगा तो सियासी आजादी अब ज्यादा टिकनेवाली नहीं हैं। दुनिया में कशमकश जारी ही रहेगी।

आज आप किसी भी दिन अखबार का कोई पन्ना उलटकर देखिये तो मालूम होगा कि दुनिया के कुछ देशों में कशमकश जारी है। केरल में क्या चल रहा है ? कश्मीर, बंगाल, उड़ीसा की क्या हालत है ? लङ्का, पाकिस्तान, बर्मा, हिन्दएशिया, कोरिया, मिस्र, ईरान में क्या चल रहा है ? तिब्बत में क्या हुआ ? ईरान में क्या होने जा रहा है ? बर्लिन का क्या होगा—यह सब देखें तो पता चलेगा कि जगह-जगह कशमकश चल रही है। इसका एक ही इलाज है—इधर ग्राम-स्वराज्य और उधर विश्व-साम्राज्य। ये दोनों मिलकर पूरा इलाज हो जाता है। गाँव-गाँव आजाद हों, इन्सान जहाँ भी बैठा हो, अपनी योजना खुद बनाये और उस पर खुद अमल करे तो ग्राम-स्वराज्य हो जायगा। ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य के बीच में स्टेट, सूबा आदि जो रहेंगे, वे सब जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। लेकिन ऊपर विश्व-साम्राज्य और नीचे ग्राम-स्वराज्य—इस तरह कुल दुनिया की योजना बनेगी, तभी दुनिया में सच्ची आजादी आयेगी। इसलिए मेरे सामने मसला सुराज्य का नहीं, स्वराज्य का है।

दलीय राजनीति निकम्मी चीज

हमें समझना चाहिए कि दलगत राजनीति इतनी छोटी और निकम्मी चीज है कि वह इस जमाने में चल ही नहीं सकती। पहले जो हसद, ईर्ष्या राजाओं के चंद सरदारों में चलती थी, उसीको इस दलगत राजनीति ने आज राष्ट्रव्यापी स्तर पर चलाया है। लोकल बोर्ड, असेम्बली, पार्लमेंट आदि सभी जगहों में ईर्ष्या और

छोटी-छोटी लड़ाइयाँ चलती हैं। इसका नतीजा यह है कि दुनिया का कब्जा उन लोगों के हाथ में रहेगा, जिनके पास आणविक शस्त्रास्त्र हैं। अमेरिका और रूस के हाथ में वैसे आणविक अस्त्र हैं, अतः आज यही चल रहा है कि कुछ मुल्कों पर अमेरिका का वरदहस्त है तो कुछ पर रूस का। कुछ मुल्क इसके पंख (छाया) में आये हैं तो कुछ उसके। हिन्दुस्तान कोशिश कर रहा है कि न इसके पंख में आये, न उसके। लेकिन यह कोशिश कहाँ तक चलेगी, कहा नहीं जा सकता। दुनिया के हालात बदलेंगे तो मुझे पता नहीं कि हिन्दुस्तान जैसे देश कैसे बचे रहेंगे, बावजूद इसके कि उनका मिलोटरी पर भरोसा हो। आज बचना है तो कुल दुनिया को बचना है और डूबना है तो कुल दुनिया को डूबना है। बचने की तरकीब है—विश्व-साम्राज्य और ग्राम-स्वराज्य। विश्वसाम्राज्य में सिर्फ सलाह देने की शक्ति हो। वहाँसे सब को नैतिक मार्गदर्शन मिले और बाकी सब काम गाँववाले खुद करें। वे अपने मसले खुद हल करें। ऐसा होगा, तभी दुनिया बचेगी।

◆◆◆

नौशेरा के फौजी भाइयों से — नौशेरा (कश्मीर) २०-६-'५९

शत्रु के लिए मन में प्रेम और इज्जत रखें

दिल और दिमाग शान्त रखना होगा

हम सामनेवाले से लड़ें, लेकिन उसके लिए मन में दुश्मनी न हो। आप देश के लिए लड़ रहे हैं। अब देश के लिए लड़ना ठीक है या नहीं, यह तो वे ही जानें, जिन्होंने यह तय किया है। उन्हींपर श्रद्धा रखकर आप लड़िये। उनकी गलती निकालना हमारा काम नहीं। फिर भी हम फर्ज के लिए लड़ रहे हैं, जब्त के साथ लड़ रहे हैं, संयम के साथ लड़ रहे हैं, मन में वैर नहीं है, ऐसा होना चाहिए। गीता ने यही कहा है—लड़ना है तो लड़ो, लेकिन निर्वैर होकर तटस्थ बुद्धि से शांत होकर लड़ो। हम तो मानते हैं कि जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा, वैसे ही वैसे यह ध्यान में आयेगा कि अगर क्रोध आये, दिमाग ठंढा नहीं रहेगा तो निशाना गलत होगा। अतः विज्ञान के लिए और धर्म के लिए भी दिमाग शांत रखकर काम करना लाजमी होता है। उससे प्यार शुरू होता है। राम-रावण का युद्ध हुआ। रावण की हार हुई। वह मर गया तो राम ने उसके श्राद्ध की व्यवस्था की थी। मतलब यह कि जिसके साथ लड़ना है, उसके लिए मन में प्रेम और इज्जत होनी चाहिए। तभी वह धर्मयुद्ध होता है। उसके लिए दिल और दिमाग शांत रखने चाहिए।

आप हमसे बहुत नजदीक

बहुत खुशी हुई कि हमें आपसे मिलने का यह मौका मिला। हम शांति-सेना का नाम लेते हैं। उसके लिए आप ज्यादा लायक हैं। क्योंकि शौर्य, धैर्य, साहस, हिम्मत आदि जो गुण उसके लिए चाहिए, वे सब आप में मौजूद हैं। इसलिए आप हमारे नजदीक से नजदीक हैं। इसके अलावा एक कारण और है। आज दुनिया मजहबों और राजनैतिक दलों के झगड़ों से तंग है। लेकिन फौज की कोई पार्टी नहीं होती। इसीलिए वह देश की फौज बनती है। हम जो सर्वोदय-समाज बनाना चाहते हैं, वह भी पक्षमुक्त समाज होगा। इसलिए भी आप हमारे नजदीक से नजदीक हैं। परमेश्वर आप सबको उत्तम बुद्धि दें, ज्ञान दें, शांति दें और प्रेम दें। ◆◆◆

[गतांक से समाप्त]

अनुक्रम

१. ग्रामदान कामधेनु है
बेडछी २५ सितम्बर '५८ पृष्ठ ५५३

२. समस्या का एक ही इलाज : ग्राम-स्वराज्य और विश्व-स्वराज्य
नारियाँ १५ जून '५९ पृष्ठ ५५५

३. शत्रु के लिए मन में प्रेम और इज्जत रखें
नौशेरा २० जून '५९ " ५५६

◆◆◆

योग्य चिकित्सा

एक दरिद्र आदमी बीमार था। डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने उससे कहा कि मेरे पास रहो, मैं तुम्हें दवा दूँगा। वह बिलकुल कृश हो गया था। डाक्टर ने उसे अपने पास रखा। उपचार शुरू किया। औषधि देने लगा और एक बात की। वह उसे थोड़ा-थोड़ा घी, शक्कर और फल खाने को देने लगा। कहने लगा कि औषधि के नाम से ये चीजें भी खाते जाओ। धीरे-धीरे उसकी ताकत बढ़ी और वह मनुष्य अच्छा हो गया।

डाक्टर की कीर्ति बढ़ी। डाक्टर दयालु है और प्यार से खिलाता है—यह सुनकर एक श्रीमान् डाक्टर के पास पहुँचा। वह श्रीमान् इतना मोटा था कि चल नहीं सकता था, हाँफता था, यहाँ तक कि सोता था तो करवट बदलने में भी उसे तकलीफ होती थी। खाया हुआ हजम नहीं होता था। दयालु डाक्टर ने उसे अपने पास रखा। पहले दिन सुन्दर पानी पिलाया। श्रीमान् को लगा कि पानी के बाद कुछ मिलेगा। परन्तु तीन दिन हो गये और चौथे दिन कांजी पिलायी। बहुत पतली कांजी थी। थोड़ा-सा चावल और उसमें बहुत सारा पानी था। शास्त्र में उसे "विलेपी" कहते हैं। 'तुम्हारे जैसे को यही पिलाना चाहिए' डाक्टर ने कहा। ५-६ दिन ऐसा ही चला। उसने पूछा कि इस पर कब तक रखोगे? 'जब तक मजबूत नहीं बनोगे। बलशाली बनानेवाला ठीक मार्ग यही है', डाक्टर ने कहा, 'कल से तुम्हें खिलायेंगे, परन्तु तुम्हारे लिए चार चीजें वर्जित हैं : गेहूँ, शक्कर, चावल और घी।' फिर डाक्टर उसे पैदल घुमाने ले गया। उसे अनुभव हुआ कि वह चल सकता है। आधा मील घूमा। डाक्टर ने कहा कि तुम्हारा वजन घटाने में ही तुम्हारा कल्याण है। शरीर की ताकत भी बढ़ेगी।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी